

## बौद्ध दर्शन- चार आर्य-सत्य

By- Dr. Arun Kumar Sinha  
Asso. Professor, Philosophy Department  
Raja Singh College, Siwan

(For Part- 1 Hons./Subs. Students)

### चतुर्थ आर्य-सत्य - दुःखों के अन्त का मार्ग है (There is a way leading to the cessation)

बुद्ध का दर्शन मध्यम मार्ग (Middle Path) का दर्शन है, बुद्ध ने तृतीय आर्य - सत्य में यह बताया की दुःख निरोध संभव है। इसके लिए उन्होंने मार्ग की भी चर्चा की है। इसे दुःख निरोध मार्ग कहा जाता है। यदि इस मार्ग पर चला जाए तब दुःख के कारणों का अंत संभव है। स्वयं महात्मा बुद्ध ने इस मार्ग को अपनाकर निर्वाण प्राप्त किया था। यह मार्ग प्रत्येक व्यक्ति के लिए खुला है, चाहे वह गृहस्थ हो या सन्यासी। बुद्ध ने सभी को इसे अपनाने का निर्देश दिया है। बौद्ध धर्म एक सर्वव्यापी धर्म (Universal Religion) है। बुद्ध ने जिन मार्गों की चर्चा की है उसे अष्टांगिक- मार्ग (Eight Fold Noble Path) भी कहा जाता है। इसे अष्टांगिक इसलिए कहा जाता है क्योंकि इसमें आठ अंग हैं। जो निम्न प्रकार से हैं :-

**1 सम्यक- दृष्टि (Right Views)** - अविद्या के कारण हम ऐसा समझते हैं की आत्मा अमर है, संसार नित्य है, किंतु यह हमारी मिथ्या दृष्टि है, इसको सही ढंग से समझना अर्थात् आत्मा और जगत के अस्तित्व के संबंध में सही ज्ञान प्राप्त करना तथा आर्य सत्य के प्रति विश्वास सम्यक दृष्टि है।

**2 सम्यक - संकल्प (Right Resolve)** - आर्य - सत्य का मात्र ज्ञान प्राप्त कर लेना ही लाभदायक नहीं होता जब तक की उसके अनुसार जीवन यापन के लिए साधक दृढ़ संकल्पित ना हो जाए। उसे सांसारिक वासनाओं के प्रति राग, अन्य लोगों के प्रति द्वेष तथा हिंसा के भाव को त्यागने का संकल्प करना होगा।

**3 सम्यक - वाक (Right Speech)** - संकल्प मनसा ही नहीं बल्कि बचन से भी होना चाहिए अर्थात् मुमुक्षा को चाहिए की वह अपने वचन पर नियंत्रण रखें, उसे मिथ्या बचन, निंदा वचन, अप्रिय वचन आदि से अपने को बचाना चाहिए।

**4 सम्यक - कर्मान्त (Right Actions)** - संकल्प का पालन कर्मों के द्वारा भी होना चाहिए साधक को मन वचन और कर्म से अहिंसा, अस्तेय, ब्रह्मचर्य आदि नियमों का पालन करना चाहिए।

**5 सम्यक - अजीव (Right Livelihood)** - उचित वचन एवं उचित कर्मों के साथ न्याय पूर्ण ढंग से जीविकोपार्जन सम्यक -अजीव है। जीविका प्राप्त करने के लिए गलत मार्ग को अपनाना साधक के लिए वर्जित है।

**6 सम्यक -व्यायाम (Right Efforts)** - सम्यक दृष्टि, सम्यक संकल्प आदि के होते हुए भी ऐसी आशंका बनी रहती है की पुरानी कुप्रभाव के कारण अपनी साधना पथ से विचलित ना हो जाएं अतः उसके लिए यह आवश्यक है कि वह मानसिक व्यायाम करें जो इस प्रकार है -

(आ) पुराने बुरे भाव को नष्ट करने का प्रयास।

(ब) नए बुरे भाव को मन में न आने देने की चेष्टा।

(स) मन को अच्छी बातों से पूर्ण रखना।

(द) अच्छे विचारों को मन में प्रतिष्ठित करने के लिए सदैव प्रयत्नशील रहना।

**7 सम्यक - स्मृति (Right Mindfulness)** - सम्यक दृष्टि, सम्यक संकल्प, सम्यक वाक, सम्यक कर्मान्त आदि के आधार पर साधक को संसार की नश्वरता का ज्ञान हो जाता है किंतु ऐसा स्वभाविक है कि वह इसे भूल कर कहीं पुनः संसार के राग द्वेष में बद्ध ना हो जाए। अतः उसे हमेशा यह याद रखना चाहिए कि संसार नश्वर है। सामान्यतयः मृत्यु आदि को देखकर किसी भी व्यक्ति के मन में विराग उत्पन्न हो जाता है किंतु कुछ समय के बाद वह इसे भूल जाता है और सांसारिक मोह ममता में लग जाता है। साधक स्वभाव से भी मनुष्य होने के नाते ऐसा ही होता है। इसलिए उसे हमेशा याद रखना चाहिए कि जिस शरीर से हम इतना अधिक मोह रखते हैं वह पंच तत्वों से निर्मित है और उसे पंच तत्वों में ही विलीन हो जाना है। अतः इस नश्वर शरीर से अधिक मोह नहीं रखना है।

**8 सम्यक - समाधि (Right Concentration)** - सात नियमों जिनका वर्णन ऊपर किया गया है के पालन से साधक का मन

शुद्ध हो जाता है और वह अपने मन को एकाग्र करके समाधि में लीन हो जाता है। समाधि की चार अवस्थाएं बताई गई हैं :-

पहला- आर्य शक्तियों के प्रति विचार करते हुए अपूर्व आनन्द एवम शांति का अनुभव करना।

दूसरा - श्रद्धा की वृद्धि, आनंद के साथ में स्थिरता आती है। यह दूसरी अवस्था है।

तीसरा - इस अवस्था में साधक आनंद और शांति के प्रति उदासीन हो जाता है। इसमें दैहिक विश्रामभाव के साथ साम्यभाव भी आते हैं। यह साम्यावस्था है जिसमें आनंद विश्राम सुख दुख किसी का भी बोध नहीं रहता।

चौथा - इसमें किसी से भी कोई राग नहीं रह जाता, यहां दुख का नाश हो जाता है।

बुद्ध के अष्टांगिक मार्ग को तीन अंगों में विभाजित किया गया है - प्रज्ञा (Knowledge), शील (Conduct) और समाधि (Concentration)। इसे 'त्रिरत्न' भी कहा जाता है। इस में अष्टांगिक मार्ग का ही विवेचन है। सम्यक वाक, सम्यक कर्मान्त और सम्यक आजीव शील के अंतर्गत हैं। सम्यक व्यायाम, सम्यक दृष्टि एवम सम्यक संकल्प समाधि के अंतर्गत हैं। इस तरह शील, समाधि और प्रज्ञा के रूप में भी निर्वाण मार्ग का प्रतिपादन होता है।